निखिलेश्वरानन्द आत्म चैतन्य दीक्षा

यह **जीवन** का बहुत बड़ा **सौभाग्य** होता है कि **शिष्य गुरू चरणों** में रह सके, उनका साहचर्य लाभ प्राप्त कर सके। **सद्गुरू** की मात्र **उपस्थिति** से ही शिष्य के अन्दर एक **चेतना** व्याप्त हो जाती है, उनकी उपस्थिति मात्र से ही **संकट** दूर हो जाते है, उनकी उपस्थिति मात्र से ही **सिद्धियां** प्राप्त हो जाती है। **सद्गुरूदेव निखिलेश्वरान्द** जैसे अन्यतम व्यक्तित्व से जो व्यक्ति एक बार **प्राणों** से जुड़ जाता है, वह उनके बिना रह नहीं पाता। वह इसी उधेड़-बुन में रहता है, कि गुरूदेव का **दर्शन लाभ** हो। अत: दीक्षा के फलस्वरूप **पूज्यपाद सद्गुरूदेव** अवश्य ही साधक के समक्ष उपस्थित होते है और इस उपस्थिति को अनेक प्रकार से अनुभव किया जाता है कभी दिव्य **अष्टगंध** के रूप में, कभी मन में आई आकस्मिक **प्रफुल्लता** से, कभी **बिम्बात्मक** रूप में दर्शन द्वारा और कभी तो प्रत्यक्ष रूप में भी। यह दीक्षा **सद्गुरूदेव** के चरणानुरागियों के लिए **अमृतफल** है। इस दीक्षा द्वारा सद्गुरूदेव की उपस्थिति का एहसास साधक को **विशेष अवसरों** पर मिलता रहता है, एक शिष्य को इससे अधिक और चाहिये भी क्या?

जीवन का वह श्रेष्ठ क्षण होता है, जब शिष्य या साधक के अन्दर चिन्तन बनता है कि अब मुझे इस मल-मूत्र से भरे जीवन में नहीं जीना है और तब वह **गुरू चरणों** में उपस्थित होकर अपने **तन, मन, वाणी, आत्मा** और **बुद्धि** की पूर्ण शुद्धि हेतु प्रार्थना करता है या दूसरे शब्दों में वह **निखिलेश्वरानन्द आत्म चैतन्य दीक्षा** प्राप्त करने की विनती करता है। गुरू के चरणों में दो प्रकार के लोग उपस्थित होते हैं- **साधक** और **शिष्य**। साधक के लिये कोई बन्धन नहीं है, वह जो कार्य करता है, एक प्रकार से अंधेरे में हाथ पांव मारने के समान है, वह पुस्तकों से लिखित क्रियाओं को सम्पन्न कर **अर्चना, ध्यानादि** करता है, भले ही वह क्रिया उसके लिये अनुकूल हो या नहीं हो। इसके विपरित **शिष्य** वह है, जो **कार्य, मन, वाणी** और **धन** से **गुरू सेवा** के लिये तत्पर हो, गुरू आज्ञा के लिये समर्पित हो, विद्या-जाति आदि के अभिमान से परे हो। इससे उसके आत्मचिंतन में **शाश्वत गुरू तत्व** स्थापन सम्भव हो पाता है।

यही **दीक्षा** शिष्य के जीवन की कोई सामान्य घटना नहीं होती, यह तो उसके **साधनात्मक जीवन** का एक सुनहरा मोड़ जिसके बाद फिर उसके **दोष,** उसके **विकार** उसकी सफलता में आड़े नहीं आते। परन्तु इसके लिये यह भी आवश्यक है, कि दीक्षा बहुत ही विनीत भाव से ग्रहण की जाये इस प्रकार की **दीक्षा** में साधक का गुरूदेव के प्रति विश्वास बहुत अधिक महत्त्व रखता है, यह दीक्षा तो अपने आप में ही शरीर को पूर्ण **तेजस्वितायुक्त** बनाने की क्रिया है, **सुगन्धयुक्त** बनाने की क्रिया है, फिर शरीर **रोगग्रस्त** नहीं हो सकता।

सद्गुरूदेव निखिल जी के **अवतरण पर्व** पर विशेष **शक्तिपात दीक्षाये** ग्रहण करते है तो निश्चिंत रूप से उस **पर्व दिवस** के भाव चिन्तनों से सरोबार होते है। इसी के फलस्वरूप उत्तरोतर जीवन के **अन्धकारमय** स्थितियां समाप्त होती है। इस **दीक्षा के तेज** से जब साधक **चैतन्य शुद्ध-बुद्ध** हो जाता है, तब उसकी वाणी में सागर के समान **गम्भीरता** आ जाती है, उसके नेत्रों में असीम **करूणा** और **सम्मोहिनी** व्याप्त हो जाती है, उसके चेहरे पर अद्भूत **शान्ति विद्यमान** हो जाती है, क्योंकि उसे तो **साक्षात् गुरूदेव** की **उपस्थिति** का भान होता रहता है, **क्योंकि बाहर कहीं नहीं स्वयं उसके भीतर ही सद्गुरूदेव पूर्णता के साथ स्थापित हो चुके होते हैं।**

न्यौछावर ₹ 1500/-

तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम.....

.....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।